# बालसंस्कृतम्

संस्कृत प्रचार पुस्तकमाला सं०-प१७

## बाल-संस्कृतम्

( हँसते-खेलते संस्कृत )

बालकों को हँसते-खेलते संस्कृत सिखाने के लिए लयबद्ध हिन्दी संस्कृत वाक्यों की अभिनव पुस्तक

( सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्, वाराणसी )

लेखक - वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

आवश्यक निवेदन- संस्थानम् द्वारा पहले की प्रकाशित पुस्तक बाल-संस्कृतम् का यह परिवर्तित संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। इस संस्करण की विशेषता यह है कि इसमें हिन्दी संस्कृत के ऐसे वाक्य रखे गये हैं जो समझ-दारी के साथ पढ़ने पर किसी न किसी लय में उतर जाते हैं और उस प्रकार सभी वाक्य सङ्गीतमय हो जाते हैं। यद्यपि कुछ वाक्य यदि पाठक उन्हें साव-धानी से पढ़ेंगे और विशेष चढ़ाव-उतार के साथ सङ्गीतमय शैली में पढ़ने का प्रयत्न करेंगे तो निश्चय ही उन वाक्यों का भी कोई न कोई लय निकल आयेगा।

इस प्रकार के वाक्यों के चयन और प्रकाशन का विशेष प्रयोजन यही हे कि छोटे-छोटे बालकों को ये वाक्य हँसते-खेलते याद हो जायँ और इस प्रकार सरलता से ही उन्हें संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान हो जाय। यदि छोटी कक्षाओं के भी बालक इन वाक्यों को बाँचने का अभ्यास करें तो उनका मनो-रंजन भी होगा और संस्कृत के ज्ञान के साथ-साथ संस्कृत पढ़ने में उनकी अभिरुचि भी उत्पन्न होगी।

परन्तु सभी छोटे-छोटे बालकों के लिए यह सम्भव नहीं है कि वे स्वयं ही सभी वाक्यों को शुद्ध-शुद्ध पढ़ लें और उनका लय भी निकाल लें। अतः अध्यापकों तथा उनके अभिभावकों से निवेदन है कि पहले वे स्वयं ही इन वाक्यों को पढ़ें उनके बाँचने का रूप निकालें और फिर अपने विद्यार्थियों तथा बालकों को उसी प्रकार से पढ़ने की शिक्षा दें।

आशा है अध्यापक एवं अभिभावकगण इस निवेदन पर ध्यान देंगे तथा इस परिश्रम को अधिकाधिक सफल बनाने की कृपा करेंगे।

वि० सं० २०६०  -विनीत

दिनाँक- १८. ११ . २००३  लेखक-

---

## बालकों को एक सलाह-

१-छात्रों, संस्कृत पढ़ो प्रेम से इसको नहीं भुलाओ।

यदि सुयोग्य बनना चाहो तो इसका ज्ञान बढ़ाओ।।

संस्कृत पढ़ने से ही होगा शुद्ध - साफ उच्चारण।

भाषा का भी ज्ञान बढ़ेगा संस्कृत के ही कारण।।

तभी लेख लिखने में भी हो तुम आगे बढ़ सकते।

संस्कृत पढ़ने से तुम अच्छी कविता भी कर सकते ।।

इसी हेतु संस्कृत पढ़ने में अब से भी लग जाओ।

साथ-साथ हिन्दी इंग्लिश के इसमें भी डट जाओ।।

२-संस्कृत पढ़ने में हैं बच्चे करते आज ढिलाई।

आगे चलकर किन्तु न होगी उनकी कभी भलाई।।

मौका आने पर अपने को जब अयोग्य पायेंगे।

भरी सभा में नत-मस्तक हो निश्चित पछतायेंगे।।

इसीलिए अब से सँभलो सावधान हो जाओ।

छात्रों, संस्कृत पढ़ो प्रेम से इसको नहीं भुलाओ।।

-''संस्कृतगौरवगानम्''

# बाल संस्कृतम्

## ( हँसते-खेलते )

१- वर्तमान काल के वाक्य-

| | |
|---|---|
| अस्ति | है |
| नास्ति | नहीं है |
| किमस्ति | क्या है ? |
| किमति नास्ति | कुछ नहीं है। |

कुछ आवश्यक अव्यय-

| | | |
|---|---|---|
| अत्र - यहाँ | अत्रैव-यहीं | अत्रापि- यहाँ भी |
| तत्र - वहाँ | तत्रैव- वहीं | तत्रापि- वहाँ भी |
| यत्र - जहाँ | यत्रैव- यहीं | यत्रापि- जहाँ भी |
| कुत्र - कहाँ | कुत्रैव- कहीं | कुत्रापि- कहीं भी |

अव्यय और क्रियापद-

| | |
|---|---|
| कुत्र अस्ति-कहाँ है | अत्र नास्ति- यहाँ नहीं है |
| तत्र अस्ति- वहाँ है | तत्र नास्ति- वहाँ नहीं है |
| अत्र अस्ति- यहाँ है | कुत्र नास्ति- कहाँ नहीं है |

| | |
|---|---|
| अत्रैव अस्ति | अत्रापि नास्ति |
| तत्रैव अस्ति | तत्रापि नास्ति |
| कुत्रापि अस्ति | कुत्रापि नास्ति |

सर्वनाम तथा संज्ञावाचक पद-

| | |
|---|---|
| तत् किमस्ति | वह क्या है ? |
| एतत् किमस्ति | यह क्या है ? |
| अयं बालकः | यह लड़का है |
| इयं बालिका | यह लड़की है। |
| इदं पुस्तकम् | यह पुस्तक है। |
| इयं पट्टिका | यह पटरी है। |
| एतत् धौतम् | यह धोती है। |
| इयं शाटिका | यह साड़ी है। |
| इदं दर्पणम | यह दर्पण है। |
| सा कङ्कतिका | यह कंघी है। |
| एष विडालः | यह बिल्ली है। |
| एषः मूषकः | यह चूहा है। |

| | |
|---|---|
| अयं कुक्कुरः | यह कुत्ता है। |
| असौ वायसः | वह कौआ है। |
| इदं कुटीरम् | यह कुटिया है। |
| एषा खट्वा | यह खटिया है। |
| इदं तालकम् | यह ताला है। |
| इयं कुञ्जिका | यह कुंजी है। |
| इदं सुन्दरम् | यह सुन्दर है। |
| इदं शोभनम् | यह अच्छा है। |

अव्यय, संज्ञावाचक  शब्द तथा क्रिया-

| | |
|---|---|
| कुत्र पुस्तकम् अस्ति | कहाँ पुस्तक है ? |
| अत्र पुस्तकम् अस्ति | यहाँ पुस्तक है। |
| कुत्र तालकम् अस्ति | कहाँ ताला है ? |
| तत्र तालकम् अस्ति | वहाँ ताला है। |
| कुत्र पेटिका अस्ति | कहाँ पेटी है ? |
| कुत्र घण्टिका अस्ति | कहाँ घण्टी है ? |
| कुत्र मृत्तिका अस्ति | कहाँ मिट्टी है ? |

| | |
|---|---|
| कुत्र वर्तते अस्ति | कहाँ स्याही है ? |
| कुत्र कुञ्जिका अस्ति | कहाँ कुञ्जी है ? |
| कुत्र आसनम् अस्ति | कहाँ आसन है ? |
| कुत्र पट्टिका अस्ति | कहाँ पटरी है ? |
| कुत्र खण्डिका अस्ति | कहाँ खड़िया है ? |
| कुत्र बालकाः सन्ति | कहाँ लड़कें हैं ? |
| कुत्र शिक्षकाः सन्ति | कहाँ शिक्षक हैं ? |
| कुत्र मोहनः अस्ति | कहाँ मोहन है ? |
| यत्र सोहनः अस्ति | जहाँ सोहन है। |
| तत्र मोहन अस्ति | वहाँ मोहन है। |

सर्वनामवाचक पद-

| | |
|---|---|
| कोऽयम् | यह कौन है ? |
| कोऽसौ | वह कौन है ? |
| कस्त्वम् | तुम कौन है ? |
| के ते | वे कौन हैं ? |

कस्य- किसका, केषाम्- किनका

तस्य- उसका  तेषाम्- उनका

अस्य - इसका  एषाम् - इनका

यस्य - जिसका,  येषाम् - जिनका

तव - तुम्हारा  मम् - हमारा

युष्माकम् - तुम लोगों का

अस्माकम् - हम लोगों का

सर्वनाम तथा क्रियापद-

कस्य अस्ति - किसका है ?

तस्य अस्ति - उसका है।

अस्य अस्ति - इसका है।

को भवान् - आप कौन हैं ? ( एकवचन )

के भवन्तः - आप कौन हैं ? ( बहुवचन )

सर्वस्य अस्ति - सबका है

भवतः अस्ति - आपका है।

इदं पुस्तकं कस्य अस्ति - यह पुस्तक किसकी है ?

इदं पुस्तकं तस्य अस्ति - यह पुस्तक उसकी है ।

इदं पुस्तकं अस्य अस्ति - यह पुस्तक इसकी है।

अयं बालकः कस्य अस्ति - यह लड़का किसका है ?

इयं बालिका कस्य अस्ति - यह लड़की किसकी है ?

मम अस्ति - हमारा है , हमारी है

तव अस्ति - तुम्हारा है , तुम्हारी है

प्रश्न तथा उत्तर के रूप में अङ्गपरिचय-

| | |
|---|---|
| क्व तव मूर्धा - | कहाँ तुम्हारा मस्तक है ? |
| अयं मदीयो मूर्धा - | यह है मेरा मस्तक। |
| क्व तव भालः - | कहाँ तुम्हारा भाल है ? |
| अयं मदीयो भालः- | यह है मेरा भाल । |
| कौ तव कर्णौ - | कौन तुम्हारे कान हैं ? |
| इमौ मदीयो कर्णौ - | यह हैं मेरे कान । |
| के तव नेत्रे - | कौन तुम्हारी आँखें हैं ? |
| इमे मदीये नेत्रे | यह हैं मेरी आँखें। |
| का तव जिह्वा - | कौन तुम्हारी जीभ है ? |
| इयं मदीया जिह्वा - | यह है मेरी जीभ । |

के तव दन्ताः - कौन तुम्हारे दाँत हैं ?

इमे मदीया दन्ताः - ये हैं मेरे दाँत ।

किं तव घ्राणम् - कौन तुम्हारी नाक है ?

इदं मदीयं घ्राणम् - यह है मेरी नाक ।

का तव ग्रीवा - कौन तुम्हारी गर्दन है ?

इयं मदीया ग्रीवा- यह है मेरी गर्दन ।

किं तव वक्षः - कौन तुम्हारी छाती है ?

इदं मदीयं वक्ष - यह है मेरी छाती ।

कौ तव बाहू - कौन तुम्हारी बाँहें हैं ?

इमौ मदीयौ बाहू - यह हैं मेरी बाँहें ।

कौ तव पादौ - कौन तुम्हारे पाँव हैं ?

इमौ मदीयौ पादौ यह हैं मेरे पाँव ।

कुछ आवश्यक वाक्य -

इदं रोचते- यह अच्छा लगता है।

इदं शोभते - यह सुन्दर लगता है।

श्रूयते - सुनाई पड़ता है।

दृश्यते- दिखाई पड़ता है।

किं नदति - क्या बज रहा है?

किं भवति - क्या हो रहा है ?

प्रथम पुरुष के क्रियापद-

गच्छति- जाता है, तिष्ठति- रुकता है, खादति- खाता है।

कथयति - कहता है, रोदिति- रोता है, गायति- गाता है।

पठति- पढ़ता है, चलति - चलता है, लिखति- लिखता है।

पिबति- पीता है, मिलति- मिलता है, वसति- रहता है।

पतति - गिरता है, हसति- हँसता है, वदति- बोलता है।

भ्रमति- घूमता है, त्यजति- छोड़ता है, क्षिपति- फेंकता है।

आगच्छति -आता है, उत्तिष्ठति- उठता है, नयते- ले जाता है।

ददाति - देता है, आनयते- लाता है, विभेति- डरता है ।

करोति- करता है, श्रृणोति- सुनता है, निवर्तते- लौटता है।

पलायते- भागता है, ज्वलति- जलता है, भरति- भरता है।

चरति- चरता है, जागर्ति- जगता है, हरति- हरता है।

धरति धरता है, झरति झरता है, खेलति- खेलता है।

निद्राति सो रहा है, चिन्तयति- सोचता है, उपविशति- बैठता है।

पश्यति- देख रहा है, नृत्यति- नाच रहा है, कर्षति- खींच रहा है।

धावति- दौड़ रहा है, पृच्छति- पूछ रहा है, इच्छति- चाह रहा है।

मुञ्चति- छोड़ रहा है, जानाति- जानता है, बध्नाति- बाँधता है।

गृह्णाति- ले रहा है, ग्रथ्नाति- गूंथता है, चोरयति- चूराता है।

गूहयति- छिपाता है, पाठयति- पढ़ाता है, लेखयति- लिखाता है।

भवति- होता है, वपति- बोता है, स्वपिति- सोता है।

वहति ढोता है, मन्यते - मानता है, याचते- माँगता है।

शिक्षते- सीखता है, बुध्यते- बूझता है।

पुलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग बोधक वाक्य-

सः किं करोति वह क्या करता है ?

सः किं कथयति वह क्या कहता है ?

सा किं करोति वह क्या करती है ?

सा किं कथयति वह क्या कहती है ?

सः गच्छति - वह जाता ह। सा गच्छति - वह जाती है।

सः गायति - वह गाता है। सा गायति - वह गाती है।

सः पठति - पढ़ता है। सा पठति - पढ़ती है।

सः लिखति - वह लिखता है। सा लिखति - वह लिखती है।

कश्चिद् गच्छति कोई जाता है।

काचिद् गच्छति कोई जाती है।

कश्चिद् गायति कोई गाता है।

काचिद् गायति कोई गाती है।

प्रथम पुरुष के प्रश्नवाचक वाक्य-

किं भवान् याचते आप क्या माँगते हैं ?

किं भवान् भाषते आप क्या बोलते हैं ?

किं भवान् ईहत आप क्या चाहते हैं ?

किं भवान् ईक्षते आप क्या देखते हैं ?

कुत्र गच्छति भवान् आप कहाँ जाते हैं ?

कुत्र निवसति भवान् आप रहते कहाँ हैं ?

कुत्र शेते भवान् आप सोते कहाँ हैं ?

कुत्र भुङ्क्ते भवान् आप खाते कहाँ हैं ?

कुत्र गच्छन्ति भवन्तः आप जाते कहाँ हैं ?

कुत्र तिष्ठन्ति भवन्तः आप कहाँ रहते हैं ?

किं कुर्वन्ति भवन्तः आप क्या करते हैं ?

किं कथयन्ति भवन्तः आप क्या कहते हैं ?

किं पृच्छन्ति भवन्तः आप क्या पूछ रहे हैं ?

किम् इच्छन्ति भवन्तः आप क्या चाह रहे हैं ?

मध्यमपुरुष के प्रश्नवाचक वाक्य-

किं शृणोषि क्या सुनते हो ?

किं करोषि क्या करते हो ?

किं कथयसि क्या कहते हो ?

किम् इच्छसि क्या चाह रहे हो ?

किं पृच्छसि क्या पूछ रहे हो ?

किं पश्यसि क्या देख रहे हो ?

कुत्र गच्छसि कहाँ जा रहे हो ?

कुत्र तिष्ठसि कहाँ रह रहे हो ?

अत्र किं कुरुषे यहाँ क्या कर रहे हो ?

तत्र किं कुरुषे वहाँ क्या कर रहे हो ?

| | |
|---|---|
| किं मार्गयसि | क्या ढूँढ़ते हो ? |
| किं याचसे | क्या माँगते हो ? |
| किं हससि | क्या हँस रहे हो ? |
| किं पठसि | क्या पढ़ रहे हो ? |
| किं लिखसि | क्या लिख रहे हो ? |
| किं वदसि | क्या बोलते हो ? |
| त्वं कर्तुं शक्नोषि | तुम कर सकते हो ? |
| त्वं गन्तुं शक्नोषि | तुम जा सकते हो ? |
| त्वं वक्तुं शक्नोषि | तुम कह सकते हो ? |
| त्वं चलितुं शक्नोषि | तुम चल सकते हो ? |
| दर्शयितुं शक्नोषि ? | दिखा सकते हो ? |
| श्रावयितुं शक्नोषि ? | सुना सकते हो ? |
| उत्तिष्ठसि - उठते हो ? | आगच्छसि - आते हो ? |
| गूहयसि - छिपाते हो? | चोरयसि - चुराते हो ? |
| आह्वयसि - बुलाते हो ? | आनयसि - ले आते हो ? |
| कथं लीयसे ? | क्यों छिपते हो ? |

| | |
|---|---|
| कथं युध्यसे ? | क्यों लड़ते हो ? |
| कथं विलम्बं कुरुषे | क्यों देरी करते हो ? |
| कथं शीघ्रतां कुरुषे | क्यों जल्दी करते हो ? |
| कथं विवादं कुरुषे | क्यों झगड़ा करते हो ? |
| कथं वञ्चनां कुरुषे | क्यों धोखा देते हो ? |
| किञ्चित् करोषि | कुछ करते हो ? |
| किञ्चित् कथयसि | कुछ कहते हो ? |
| किं नयसे | क्या ले जाते हो ? |
| किम् आनयसे | क्या लाते हो ? |
| जागर्षि- जागते हो? | जानासि - जानते हो ! |
| निद्रासि - सो रहे हो ? | आयासि - आ रहे हो ! |
| युध्यसे - झगड़ते हो ? | बुध्यसे - समझते हो ? |
| कथं हन्सि | क्यों मार रहे हो ? |
| कथं क्षिपसि | क्यों फेंक रहे हो ? |

उत्तम पुरुष के वाक्य-

| | |
|---|---|
| मैं पढ़ता हूँ- अहं पठामि, | मैं लिखता हूँ - अहं लिखामि, |

मैं चलता हूँ - अहं चलामि,  मैं रहता हूँ - अहं वसामि,

मैं पीता हूँ - अहं पिबामि,  मैं रुकता हूँ - तिष्ठामि अहं,

मैं हँसता हूँ - अहं हसामि,  मैं खाता हूँ - खादामि अहं,

मैं जाता हूँ - अहं गच्छामि,  मैं गिनता हूँ - गणयामि अहं,

मैं कहता हूँ - अहं कथयामि,  मैं पाता हूँ - प्राप्नोति अहं,

मैं गाता हूँ - गायामि अहम्,  हम लिखते हैं - वयं लिखामः,

मैं कर सकता हूँ - शक्नोमि अहम्,  हम हँसते हैं - वयं हसामः,

हम पढ़ते हैं - वयं पठामः,  हम वसते हैं - वयं वसामः,

हम होते हैं - वयं भवामः,

हम पीते हैं - वयं पिबामः,

पृच्छामि - पूछता हूँ  पश्यामि - देखता हूँ

इच्छामि - चाहता हूँ  खेलामि - खेलता हूँ

धावामि- दौड़ता हूँ  सिञ्चामि - सींचता हूँ

ग्रथ्नामि - गूँथता हूँ  जानामि - जानता हूँ

वयं पठामः  हम पढ़ते हैं

वयं लिखामः  हम लिखते हैं

| | |
|---|---|
| वयं चलामः | हम चलते हैं |
| वयं हसामः | हम हँसते हैं |
| वयं वसामः | हम रहते हैं |
| वयं व्रजामः | हम जाते हैं |
| एष गच्छामि | अभी जाता हूँ |
| एष आयामि | अभी आता हूँ |
| अहं ज्ञातुमिच्छामि | मैं जानना चाहता हूँ |
| अहं द्रष्टुमिच्छामि | मैं देखना चाहता हूँ |
| अहं प्रष्टुमिच्छामि | मैं पूछना चाहता हूँ |
| अहं वक्तुमिच्छामि | मैं बोलना चाहता हूँ |
| पुस्तकमानेतुं गच्छामि | मैं पुस्तक लाने जाता हूँ |
| लेखं दर्शयितुं गच्छामि | मैं लेख दिखाने जाता हूँ |
| पाठं श्रावयितुं गच्छामि | मैं पाठ सुनाने जाता हूँ |
| खेलं खेलयितुं गच्छामि | मैं खेल खेलाने जाता हूँ |
| श्रीमन् आगन्तुं शक्नोमि! | श्रीमन् क्या मैं आ सकता हूँ |
| श्रीमन् गन्तुं शक्नोमि! | श्रीमन् क्या मैं जा सकता हूँ |

| | |
|---|---|
| न जाने अहम् | मैं नहीं जानता |
| न मन्ये अहम् | मैं नहीं मानता |
| न इच्छाम्यहम् | मैं नहीं चाहता |
| न बुद्धये अहम् | मैं नहीं बूझता |
| अहं पठितुं व्रजामि | मैं पढ़ने जाता हूँ |
| अहं लिखितुं व्रजामि | मैं लिखने जाता हूँ |
| अहं भोक्तुं व्रजामि | मैं खाने जाता हूँ |
| अहं पातुं व्रजामि | मैं पीने जाता हूँ |
| अहं शयितुं व्रजामि | मैं सोने जाता हूँ |
| भोक्तुमिच्छामि | खाना चाहता हूँ |
| पातुमिच्छामि | पीना चाहता हूँ |
| गन्तुमिच्छामि | जाना चाहता हूँ |
| स्थातुमिच्छामि | रुकना चाहता हूँ |
| अह कर्तुं शक्नोमि | मैं कर सकता हूँ |
| अहं पठितुं शक्नोमि | मैं पढ़ सकता हूँ |
| अहं लिखितुं शक्नोमि | मैं लिख सकता हूँ |

अहं गन्तुं शक्नोमि मैं जा सकता हूँ

अहं वक्तुं शक्नोमि मैं कह सकता हूँ

अहं गातुं शक्नोमि मैं गा सकता हूँ

आज्ञावाचक वाक्य ( मध्यमपुरुष की क्रियाएँ )

एहि - आओ, याहि - जाओ

ब्रूहि - बोलो, पश्य - देखो

गच्छ - जाओ, तिष्ठ - ठहरो

पृच्छ - पूछो, रक्ष - रखो

पठ - पढ़ो, लिख - लिखो

चल - चलो, वद - कहो,

शृणु - सुनो, कुरु - करो,

नय - ले आओ, आनय - लाओ,

विरम - रुको, दर्शय - दिखलाओ,

वद - बोलो, प्रापय पहुँचाओ,

तिष्ठ - रुको, बोधय - समझाओ,

उपविश - बैठो, कथय - कहो,

रचय - बनाओ, गणय - गिनो,

आह्वय - बुलाओ, निरूपय - बताओ,

विलोपय - मिटाओ, अपसारय - हटाओ,

लगय - लगाओ, मोचय - खोलो,

प्रक्षिप - फेंको, तोलय - तौलो,

बधान - बाँधो, विमुञ्च - खोलो,

गृहाण - ले लो निधेहि - रखो,

पिधेहि - ढक दो, ददस्व - दे दो,

छिन्दि - काटो, भिन्धि - फोड़ो,

रुन्धि - रोको, विद्धि - समझो,

पच - पकाओ, खाद - खाओ,

शेष्व - सोओ, गाय - गाओ,

उत्तिष्ठ - उठो, जागृहि - जागो,

आलस्यं त्यज- आलस त्यागो

दूरम् अपसर - दूर हटो

मौनं धारय - मौन रहो

दुग्धं पिब - दूध पिओ

जीव चिरम् - खूब जिओ।

बहुवचन के वाक्य-

| | |
|---|---|
| यूयं पठत | तुम सब पढ़ो |
| यूयं रटत | तुम सब रटो |
| यूयं कुरुत | तुम सब करो |
| यूयं लिखत | तुम सब लिखो |
| यूयं चलत | तुम सब चलो |
| यूयं तिष्ठत | तुम सब ठहरो |
| यूयं गच्छत | तुम सब जाओ |
| यूयं खेलत | तुम सब खेलो |
| यूयं गायत | तुम सब गाओ |
| यूयं धावत | तुम सब दौड़ो |
| यूयं पश्यत | तुम सब देखो |
| यूयं पृच्छत | तुम सब पूछो |

अतिथिसत्कार सम्बन्धी वाक्य-

| | |
|---|---|
| आसनमानय | आसन लाओ |
| कम्बलमानय | कम्बल लाओ |
| पीठम् आनय | पीढ़ा लाओ |
| नीरम् आनय | पानी लाओ |
| पादौ धावय | पैर धुलाओ |
| हस्तौ धावय | हाथ धुलाओ |
| भक्तम् आनय | भात लाओ |
| रोटीम् आनय | रोटी लाओ |
| दालिम् आनय | दाल ले आओ |
| शाकम् आनय | साग ले आओ |
| लेह्यम् आनय | चटनी लाओ |
| आज्यं तापय | घी गरमाओ |
| दधि परिवेषय | दही परोसो |
| दुग्ध पायय | दूध पिलाओ |
| दृष्ट्वा दृष्ट्वा | देख देखकर |
| पृष्ट्वा पृष्ट्वा | पूछ पूछकर |

| | |
|---|---|
| सम्यग् भोजय | खूब खिलाओ |
| क्षीरम् आनय | दूध ले आओ |
| अग्निं ज्वालय | आग जलाओ |
| चायं विरचय | चाय बनाओ |
| आसनमानय | आसन लाओ |
| पुस्तकमानय | पुस्तक लाओ |
| पाठं श्रावय | पाठ सुनाओ |
| लेखं दर्शय | लेख दिखाओ |
| अर्थं ज्ञापय | अर्थ बताओ |
| खेलं खेलय | खेल खेलाओ |
| द्रुतं कुञ्जिकामानय | जल्दी चाभी लाओ |
| शीघ्रं द्वारम् उद्घाटय | जल्दी दरवाजा खोलो |
| सुष्ठु घण्टिकां वादय | घण्टी अच्छी तरह बजाओ |
| सुष्ठु प्रार्थनां कारय | प्रार्थना अच्छी तरह कराओ |
| दीपशलाकामानय | दियासलाई लाओ |
| दीपं शीघ्रं ज्वालय | दीपक शीघ्र जलाओ |

बच्चों द्वारा बड़ों से कहने के वाक्य-

पापा पाठं पाठय  पापा पाठ पढ़ा दो

लाला लेखं लेखय  लाला लेख लिख दो

चाचा चित्रं दर्शय  चाचा चित्र दिखा दो

बाबा विस्कटमानय  बाबा बिस्कुट ला दो

भैया चायं पायय  भैया चाय पिला दो

बाबू श्लोकं श्रावय  बाबू श्लोक सुना दो

दीदी दीपं ज्वालय  दीदी दीप जला दो

काका कन्दुकमानय  काका गेंद ला दो

पलायस्व - भागो,  निवर्तस्व - लौटो,

श्रणु श्रृणु - सुनो सुनो।

निषेध सूचक वाक्य-

मा उद्घाटय  मत खोलो

मा पिधेहि  मत बन्द करो

एवं मा कुरु  ऐसा मत कर

| | |
|---|---|
| एवं मा वद | ऐसा मत कह। |
| अत्र आगच्छ | यहाँ आ जाओ। |
| तत्र मा गच्छ | वहाँ मत जाओ। |
| अत्र मा ष्ठीव | यहाँ थूको मत। |
| अत्र मा छिक्क | यहाँ छींको मत। |
| अत्र मा बुक्क | यहाँ भूँको मत। |
| अत्र मा धाव | यहाँ दौड़ो मत। |
| अत्र मा तिष्ठ | यहाँ ठहरो मत। |
| कलहं मा कुरु | झगड़ा मत कर। |
| बक बक मा कुरु | बक बक मत कर। |
| चक चक मा कुरु | चक चक मत कर। |
| गालिं मा वद | गाली मत बक। |
| स्पष्टं वद | साफ कहो। |
| सम्यक् चल | ठीक चलो। |
| शुद्धं कुरु - शुद्ध करो, | सज्जं कुरु - ठीक करो। |
| स्वच्छं कुरु - साफ करो, | पिहितं कुरु - बन्द करो। |

अनुरोधवाचक वाक्य-

प्रथमपुरुष की क्रियाएँ-

करोतु - करिये, लिखतु - लिखिये, वदतु - कहिये,

चलतु - चलिये, मिलतु - मिलिये, वसतु - रहिये,

पठतु भवान् - आप पढ़ें, लिखतु भवान् - आप लिखें,

चलतु भवान् - आप चलें, वदतु भवान् - आप कहें,

गच्छतु भवान् - आप जायें, तिष्ठतु भवान् - आप ठहरें,

पश्यतु भवान् - आप देखें, पृच्छतु भवान् - आप पूछें,

गन्तुं ददातु - जाने दें, वक्तुं ददातु - कहने दें,

श्रोतुं ददातु - सुनने दें, भोक्तुं चलतु - खने चलें,

शयितु चलतु - सोने चलें,

कर्मवाच्य की क्रियाएँ-

आइये - आगम्यताम्, बैठिये - उपविश्यताम्,

लाइये - आनीयताम्, ढूँढ़िये - अन्विष्यताम्,

गम्यताम् - जाइये, देखिये - दृश्यताम्,

बोलिये - उच्यताम्, दीजिये - दीयताम्,

लीजिये - गृह्यताम्  पीजिये - पीयताम्,

खाइये - भुज्यताम्,  जरा रुक जाइये - स्थीयतां किञ्चित्,

जरा सुन लीजिये - श्रूयतां किञ्चित्,

जरा दिखलाइये - दर्श्यतां किञ्चित्,

जरा समझाइये - बोध्यतां किञ्चित्,

आगम्यताम् आगम्यताम् - आ जाइये आ जाइये,

सानन्दमिह उपविशताम् - सुख से यहां बैठिये,

कुशलं स्वकीयं कथ्यताम् - अपना कुशल बताइये।

नीयतां - ले जाइये,  आनीयताम् - ले आइये।

पठ्यताम् लिख्यताम् - पढ़िये लिखिये

चल्यताम् मिल्यताम् - चलिये मिलिये।

पाठ्यताम् - पढ़ाइये, लेख्यताम् - लिखाइये।

शोध्यताम् - सुधारिये, शिक्ष्यताम् - सिखाइये।

क्षम्यताम् - क्षमा करें,

विरम्यताम् - रुके रहें।

मा गम्यताम् - मत जाइये।

मा दीयताम् - मत दीजिये।

मा गृह्यताम् - मत लीजिये।

मा मुच्यताम् - मत छोड़िये।

मा हन्यताम् - मत मारिये।

मा उच्यताम् - मत बोलिये।

विरच्यताम् - बनाइये,

विचार्यताम् - विचारिये,

प्रसार्यताम् - पसारिये,

निरीक्ष्यताम् - निहारिये,

उत्थीयताम् - उठ जाइये,

अपर्यताम् - हट जाइये,

आदिश्यताम् - फरमाइये,

निर्दिश्यताम् - बतलाइये,

उल्लिख्यताम् - लिख लीजिये?

आपूर्यताम् - भर दीजिये।

## ४- भूतकाल के वाक्य

सः आसीत् - वह था।

त्वम् आसीः - तुम थे।

अहमासम् - मैं था।

स कुत्रासीत् - वह कहाँ रहा ?

ते कुत्रासीत् - वे कहाँ रहे?

त्वम् कुत्रासीः - तुम कहाँ रहे ?

अहमत्रासम् - मैं यहाँ रहा।

आगतः - आ गया, प्रथितः - चल दिया,

जागरितः - जग गया, निद्रितः - सो गया,

उत्थितः - उठ गया, अपसतः - हट गया,

आगतो भवान् - आत आ गये।

प्रस्थितो भवान् - आप चल दिये।

निद्रितो भवान् - आप सो गये।

जागरितो भवान्- आप जग गये।

उत्थितो भवान् - आप उठ गये।

अपसृतो भवान् - आप हट गये।

अहमुत्स्थितः - मैं उठ गया।

अहमागतः - मैं आ गया।

आगता - आ गयी, निद्रिता - सो गयी,

उत्स्थिता - उठ गयी जागरिता - जग गयी,

त्वम् आगतः - तुम आ गये।

त्वम् प्रस्थितः - तुम चल दिये।

भग गया - पलायितः

छिप गया - लुक्कायितः

ज्ञातम् - जाना, बुद्धम् - समझा

दृष्टम् - देखा, पृष्टम् - पूछा

पुंलिङ्गः-

गतवान् - गया, कृतवान् - किया, श्रुतवान् - सुना,

पठितवान् - पढ़ा, लिखितवान् - लिखा,

चलितवान् - चला, मिलितवान् - मिला,

कथितवान् - कहा, रचितवान् - रचा,

भुक्तवान् - खा लिया, पीतवान् - पी लिया,

नीतवान् - ले गया, दत्तवान - दे दिया,

दृष्टवान् - देखा, पृष्टवान् - पूछा, त्यक्तवान् - छोड़ा,

उक्तवान् - बोला,

कदा गमिष्यसि - कब जाओगे ?

कदा वदिष्यसि - कब बोलोगे ?

कदा पुनः आयास्यसि - फिर कब आओगे ?

कदा पुनः त्वं यास्यसि - फिर तुम कब जाओगे ?

कदा दर्शनं दास्यसि - घर से कब निकलोगे ?

खेलिष्यसि - खेलोगे ? धाविष्यसि - दौड़ोगे ?

अहं पाठं पठिष्यामि

अहं लेखं लेखिष्यामि

अहं कार्यं करिष्यामि

अहं ग्रामं गमिष्यामि

अहं धीरो भविष्यामि

अहं वीरो भविष्यामि

अहं नेता भविष्यामि

अहं जेत भविष्यामि

अहं नेता भविष्यामि

अहं जेत भविष्यामि

कुत्र चलिष्यसि ?  कहाँ चलोगे ?

कुत्र मिलिष्यसि ?  कहाँ मिलोगे ?

कुत्र पठिष्यसि ?  कहाँ पढ़ोगे ?

कुत्र भविष्यसि ?  कहाँ रहोगे ?

किं खादिष्यसि ?  क्या खाओगे ?

किं परिधास्यसि ?  क्या पहनागे ?

कदा गमिष्यसि ?  कब जाओगे ?

कदा प्राप्यसे ?  कब पहुँचोगे ?

किं नेष्यसि ?  क्या ले जाओगे ?

किम् आनेष्यसि ?  क्या लाओगे ?

अहं मारयिष्यामि ?  मैं मार दूँगा ।

अहं ताडयिष्यामि ?  मैं पीट दूँगा ।

अहं कुट्टयिष्यामि  मैं कूट दूँगा ।

अहं त्रोटयिष्यामि मैं तोड़ दूँगा ।

पोथयिष्यामि पटक दूँगा ।

पातयिष्यामि गिरा दूँगा ।

तव्यत् प्रत्यय के वाक्य -

गन्तव्यं जाना चाहिये।

पठितव्यं पढ़ना चाहिये।

चलितव्यं चलना चाहिये।

स्थातव्यं रहना चाहिये।

लेखितव्यं लिखना चाहिये।

वक्तव्यं कहना चाहिये।

कर्तव्यमस्ति करना है।

वक्तव्यमस्ति कहना है।

गन्तव्यमस्ति जाना है।

आनेयमस्ति लाना है।

आज्ञा लेने के वाक्य -

करवाणि किं ! करूँ क्या !

रचयानि किं ! रचूँ क्या !

कथयानि किं ! कहूँ क्या !

श्रवणानि किं ! सुनूँ क्या !

कुत्र गच्छेयम ? कहाँ जाऊँ !

कुत्र तिष्ठेयम् ? कहाँ ठहरूँ ?

कुत्र रक्षेयम् ? कहाँ रखूँ ?

कुत्र सर्पेयम् ? कहाँ सरकूँ ?

कुत्र पठेयम् ? कहाँ लिखूँ ?

कुत्र चलेयम् ? कहाँ चलूँ ?

कुत्र भवेयम् ? कहाँ रहूँ ?

आज्ञा देने के वाक्य -

श्रुत्वा गच्छेः सुनकर जाना।

उक्त्वा गच्छेः कहकर जाना ।

भुक्त्वा गच्छेः खाकर जाना ।

द्रुतमागच्छेः जल्दी आना ।

शीघ्रमानयेः जल्दी लाना ।

पूर्वकालिक क्रिया के वाक्य-

गत्वा - जाकर, श्रुत्वा - सुनकर, उक्त्वा - कहकर,

स्थित्वा - रहकर, भुक्त्वा - खाकर, पीत्वा - पीकर,

दत्त्वा - देकर, गृहीत्वा - लेकर, नत्वा - झुककर,

चलित्वा - चलकर, हसित्वा - हँसकर, मिलित्वा - मिलकर,

पठित्वा - पढ़कर, लिखित्वा - लिखकर, दृष्ट्वा - देखकर चल।

पृष्ट्वा पठ - पूछकर पढ़ो। ज्ञात्वा कुरु - जानकर करो।

स्थित्वा लिख - बैठकर लिखो।

समाप्तम् - खत्म, निगीर्णम् - हजम।

नाम तथा ग्राम आदि के सम्बन्ध में प्रश्न एवं उत्तर-

प्र०-१- तव किं नाम अस्ति? तुम्हारा नाम क्या है?

उ०- मम नाम .....अस्ति। मेरा नाम.....है।

प्र०२- त्वं कुत्र निवससि? तुम कहाँ रहते हो?

उ०- अहं .....ग्रामे निवसामि। मैं .....गाँव में रहता हूँ।

प०३ त्वं किं पठसि? तुम क्या पढ़ते हो?

उ०- अहं हिन्दीं, संस्कृतं तथा आंग्लभाषां पठामि। मैं हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी

भाषा पढ़ता हूँ।

प्र०४- कुत्र पठसि? कहाँ पढ़ते हो?

उ०- .....पाठशालायां पठामि। .....पाठशाला में पढ़ता हूँ।

प्र०५- कस्यां कक्षायां पठसि ? किस कक्षा में पढ़ते हो ?

उ०- अहं.....कक्षायां पठामि । मैं.....में पढ़ता हूँ ।

प्र०६- तव मण्डलं किम् ? तुम्हारा कौन जिला है ?

उ०- मम मण्डलं.....अस्ति। मेरा जिला.....है।

प्र७- तव पत्रालयः कः ? तुम्हारा डाकखाना कौन है ?

उ०- मम पत्रालयः..... अस्ति। मेरा डाकखाना.....है ।

प्र०८- तव आरक्षिस्थानं किम् ? तुम्हारा थाना क्या है ?

उ०- मम आरक्षिस्थानं .....अस्ति। हमारा थाना.....है।

प्र०९- कुशलं वर्तते ? कुशल तो है?

उ०- आम्, कुशलं वर्तते। हाँ कुशल है।

सूचना- श्रेष्ठ पुरुषों से पूछना हो तो ''त्वं, तव'' के स्थान पर ''भवान्, भवतः''

कहना चाहिये।

## प्रार्थनागीतम्

( लय- तेरे पूजन के ऐ मोहन पुजारी बन के आया हूँ )

दयामय ! देव ! दीनेषु दयादृष्टिः सदा।

प्रतिज्ञा दीनरक्षाया दयालों ! जातु नो हेया।। दयामय.....

मनुष्या मानवा भूत्वा इदानीं दानवा जाताः ।

तदेषा मूढ़ता देशात् द्रुतं दूरे त्वया नेया।। दयामय.....

त्वदुपदेशामृतं त्यक्त्वा विपन्नो हन्त लोकोऽयम्।

तदुद्धाराय एतेषां प्रभो गीता पुनर्गेया ।। दयामय.....

किमधिकं ब्रूमहे भगवन् ! निवेदनमेतदेवैकम् ।

यदेते बालकाः स्वीयाः प्रभो ! नो विस्मृतिं नेयाः ।। दयामय.....

## प्रार्थनागीतम्-

( लय - माँ शारदे कहाँ तू वीणा बजा रही हो )

भगवन् ! त्वदीय-भक्तिं न कदापि विस्मरेयम् ।

निज-देश-जाति-सेवाऽऽसक्तः सदा भवेयम्।। भगवान्.....

जायेत जातु नो मे पर - पीडनाऽभिलाषः।

दीने सहायहीने सततं प्रभो द्रवेयम् ।। भगवान्.....

गतिरस्तु सर्वदेशे रतिरस्तु नैजवेषे।

गुरुपादयोर्निदेशे स्वमनः प्रवर्तयेयम् ।। भगवान् .....

कुरुते सदा विनीतो विनयं कृपैकसिन्धो।

गुरु-पूज्य-वृन्द-सेवा-करणे वयो नयेयम् ।। भगवान्.....